शनि के नाम पर महालूट और आतंक

पंडित और ज्योतिषियों द्वारा भारतीय हिन्दू को अंधविश्वास और डरके नरक में डालकर रचाया गया एक महाआतंक

मेरी सात पीढ़ियाँ ज्योतिषी हैं, मेरे पिता, ताऊ, भाई, चाचा आदि ये अधिकतर मेरा परिवार ज्योतिष के साथ जुड़ा हुआ है। सिर्फ मुझे अकेले को छोड़कर, मुझे ज्योतिष विज्ञान के प्रति बहुत आदर है। हमारे ऋषियों का यह गहन अध्ययन पूजनीय है। मैं स्वयं हस्तरेखा विज्ञान को अच्छी तरह जानता हूँ और शत-प्रतिशत ठोस विज्ञान है। यह सिद्ध भी कर सकता हूँ। हस्तरेखा विज्ञान आपका अक्षरश: ब्लू प्रिन्ट है। जो आप हैं वही आपका हाथ है। परंतु ग्रहों और कुंडली का जो शास्त्र है उसमें सबसे ज्यादा धांधली है या मैं यूँ कहूँ कि धांधली पंडित, ज्योतिषी या ब्राह्मणों द्वारा अपनी आय का जरिया बनाने के लिए हजारों तरह से तोड़-मरोड़ कर ज्योतिष जैसे श्रेष्ठ विज्ञान को एक डर, एक अंधविश्वास, एक आतंक का विज्ञान बनाकर रख दिया है। शनि, मंगल, राहुकेतु के नाम पर जैसे मर्जी वैसे भोली-भाली रोगों और कष्टों में उलझी जनता को लूटा जा रहा है। सदियों से भारतीय लोग पंड़ित और ज्योतिषियों के आतंक को चुपचाप सहन किए जा रहे हैं लेकिन आज तक किसी भी व्यक्ति, समाज, बुद्धिजीवी, डॉक्टर या वैज्ञानिक ने इस आतंक के विरोध में कभी कोई जोरदार आवाज नहीं उठाई। भारत में जिस तरह भ्रष्टाचार का आतंक है उतना ही बड़ा आतंक शनि महाराज का भी है। हम सभी के दिमाग में भी कहीं न कहीं इसका विरोध करने का डर है।

मैंने अपने प्रशिक्षण शिविरों द्वारा लाखों लोगों को इस डर और भ्रम से निकालकर मुक्त किया है लेकिन आज भी करोड़ों भारतीय विशेषकर हिन्दू समाज शनि के डर से ग्रसित है।

आखिर क्यों हम इन ग्रहों के डर कर जी रहे हैं? क्यों हमारे दिमाग में ये विचार नहीं पैदा होता कि आखिकार ये ग्रह हमारे पीछे हाथ धोकर क्यों पड़ गए हैं? क्यों परमात्मा ने बेमतलब से शनि-मंगल, राहु-केतु जैसे खतरनाक ग्रह हमारे पीछे लगा दिए? क्या सचमुच ग्रह हमें परेशान करते हैं? कहीं ये हमारे दिमाग में बैठे-बिठाए फालतू के वहम तो नहीं है।

हम ये प्रश्न नहीं पैदा करते, क्या इन सारे ग्रहों की लगाम इन पंडितों के हाथों में है? क्या ये ग्रह मानवरूपी हैं? जिनका हजारो बार नाम जपने से अहंकार तृप्त होता है। लेकिन दुर्भाग्यवश, अज्ञानतावश हम ये प्रश्न करते ही नहीं और अगर ये प्रश्न करते भी हैं तो चुपचाप दबाकर पंडितों और ज्योतिषियों द्वारा रचे गए शनि-मंगल के आतंक को भोग रहे होते हैं। किसी भी ग्रह को आप में रूचि नहीं है? सारे ब्रह्माण्ड में हर ग्रह, हर प्राणी, पेड़-पौधे, वस्तुएँ, प्राकृतिक तत्व एक दूसरे को अपनी तरंगों से प्रभावित कर रहे हैं। हम सभी एक-दूसरे ग्रह आपको सुखी या दु:खी करने के लिए नहीं घूम रहे हैं। इन ग्रहों को किसी में रूचि नहीं है। ये ठीक अपने स्वभावानुसार एक दूसरे के गुरूत्वाकर्षण में बंध कर लाखों वर्षों से अपनी धुरी में घूम रहे हैं और इनके घुमने से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में, धरती सहित तरंगें कम ज्यादा होती रहती हैं। हमारे चारो तरफ ये कम ज्यादा होती तरंगे इतनी सूक्ष्म मात्रा में है कि जिसका मूल्य एक चिंटी जितना भी नहीं है हम जब मन और शरीर से कमजोर होते हैं तो हमारा ऊर्जा क्षेत्र (आभामंडल-औरा) इनसे प्रभावित होने लगता है। जब हम सामान्य स्वस्थ एवं सशक्त होते हैं तब हमें इन ग्रहों की तरंगों का पता तक नहीं चलता। जैसे स्वस्थ अवस्था में हम किसी भी ध्वनि को आसानी से सहन कर लेते हैं लेकिन दुर्बल और बीमार होने पर एक बातचीत जैसी हल्की ध्वनि भी बर्दाश्त नहीं कर पाते हैं। बस यूँ समझ ले कि इन ग्रहों की तरंगें हमारी बातचीत की तरंगों जितनी हल्की तरंगें हैं। ग्रहों की तरंगें अवश्य। ये तरंगे, आपको कमजोर नहीं करती आप जब अपने मन, शरीर, खानपान एवं गलत जीवन पद्धति से अपने आपको कमजोर करते हैं तब ये सूक्ष्म हल्की तरंगें आपको महसूस होने लगती हैं। आप अपनी क्षमता को जीवन भर कमजोर न करें तो जीवन भर आपको इन तरंगों का कोई अनुभव नहीं होगा। मैं मेरे प्रशिक्षण शिविरों में व्यवहारिक प्रयोगों द्वारा सिद्ध करके दिखाता हूँ कि हमारा ऊर्जा क्षेत्र (आभामंडल) 100 किलो के आदमी को धक्का मारकर दूर कर देता है तो ग्रहों की तरंगें तो 5 ग्राम की भी नहीं हैं। ग्रहों की तरंगों से तो कई गुना शक्तिशाली तरंगें तो ध्वनि की होती हैं।

विपरीत ऊर्जा से हम किसी भी ऊर्जा का प्रतिरोध कर सकते हैं:- हम अच्छी तरह जानते हैं कि सूर्य जब गर्मी या सर्दी पैदा करता है तो हम इस सर्दी या गर्मी का विपरीत ऊर्जा के माध्यम से प्रतिरोध कर लेते हैं और मजे से सामान्य जीवन के सारे कार्य कर रहे होते हैं। जब सर्दी होती है तो हम हीटर, गर्म कपड़े, मकानों में अपने आपको सामान्य अवस्था में रख लेते हैं, गर्मी होने पर हम एयर कंडीशनर एवं ठंडे पानी या पंखों से अपने आपको सामान्य अवस्था में रख लेते हैं। हम यह भी जानते हैं कि अगर हमारी शारीरिक क्षमता और ऊर्जा प्रबल होती है हम ठंडी गर्मी के प्रभावों को लंबे समय

तक लड़कर मज़े से झेल रहे होते हैं और जब हम कमजोर हो जाते हैं। ठंडी और लू की लपटों से हम बीमार भी पड़कर मर भी जाते हैं।

ऊर्जा प्रबल करने के नियम अपनाएँ - ठंडी गर्मी, ग्रहों की तरंगे अपनी जगह पर है आप सारा ध्यान इस बात पर लगाएँ कि किस तरह आपका शरीर प्रबल ऊर्जावान बन सकता है। सही आहार, व्यायाम, प्राणायाम, विश्राम, शुद्ध हवा, सकारात्मक विचारों से एवं कार्यों से। हमारे नकारात्मक विचार, भावनाएँ, डर, गलत आहार, जीवन एवं प्रदूषित वातावरण हमारी शारीरिक क्षमताओं को क्षीण करती है। उस स्थिति में हम किन्हीं भी तरंगों का प्रतिरोध नहीं कर पाते हैं। तो असली मुद्दा तो शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं को जीवन में मजबूत बनाना है। कैसे इस अवैज्ञानिक आधार रहित विकल्प को स्वीकार कर लेते हैं कि पंडितों का पूजा-पाठ, ग्रहों की पूजा, मंत्र जाप या दान-दक्षिणा इन ग्रहों की तरंगों को शांत कर देगी। जब सर्दी गर्मी को आप शारीरिक एवं मानसिक क्षमता बढ़ाकर प्रतिरोध करते हैं तो ग्रहों की तरंगें जो गर्मी-सर्दी के मुकाबले तुच्छ सी ऊर्जा है। उसके लिए आप शारीरिक, मानसिक क्षमताओं को बढ़ाने के बजाय। पंडितों -ज्योतिषियों की जेब भरते हैं, डर-डर कर हवन, पूजा-पाठ कर कौन से ग्रहों के अहंकार को शांत करते हैं? तीर्थ यात्राएँ और मंदिरों में जाकर अपनी हाजिरी दर्ज करवा कर किन देवताओं के अहंकार को तृप्त करते हैं।

हमारा जीवन ग्रहों से नहीं पूर्वजन्म से निर्धारित होता है।

हम आज ठीक अपने पूर्वजन्मों के कर्मफल हैं, हमारी आत्मा के चारो तरफ जो संस्कार है वे समय के साथ विकसित हुए आदिम युग में जब मानव जीवन का कोई विकास नहीं था। न कोई लंबा-चौड़ा समाज था, न ज्यादा रीति रिवाज, न कोई कायदे-कानून थे, न कोई व्यवसाय-नौकरी थी। उस समय हम पर न तो शनि लगते थे, न मंगल, न राहू केतु। लगने को कुछ था ही नहीं। संस्कारों का आवरण कम था तो जन्म भी उसी प्रकार मिलता था। हमारा जन्म पूर्वजन्म के संस्कारों के अनुरूप फलित होता है ग्रहों के अनुरूप नहीं। अगर ऐसा होता तो एक ही समय में एक ही शहर में या विश्व में पैदा होने वाले सैकड़ो बच्चों का भाग्य उस तारीख और ग्रहों के अनुरूप ही एक जैसा होना चाहिए और अगर सब कुछ ग्रहों के प्रभावों से या चाल से ही निर्धारित होता है तो फिर पूर्वजन्म के कृत्य और संस्कारों का कोई अर्थ ही नहीं रह जाता और आजकल कई परिवार अपनी मर्जी के ग्रहों की स्थिति के अनुसार डॉक्टर को एक विशेष तिथि पर ऑपरेशन करवाकर बच्चे को संसार में ले आते हैं, इसके बावजूद भी बच्चे के अन्दर ग्रहों की स्थिति के अनुसार गुण - धर्म स्वभाव पैदा नहीं होते, माँ-बाप से शरीर मिलने की सुविधा मिलती है, आत्मा अपने कर्मों के, संस्कारों अनुरूप जन्म लेती है, ऊँची आत्माएँ अपनी आवश्यकतानुसार माँ-बाप, देश, परिस्थितियों का चुनाव कर जन्म लेती है। सामान्य आत्माओं का जन्म उनके नियंत्रण में नहीं होता। जन्म के समय ग्रहों की स्थिति परिणाम है जन्म का कारण नहीं। आपके संस्कार ही वह चुम्बकीय ऊर्जा है जो उसके आसपास जीवन में वही व्यक्ति, वही परिस्थिति, वही घटनाएँ आकर्षित करती हैं जिसका आकर्षण हमारे भीतर है। आपकी अमीरी-गरीबी आपके अच्छे संबंध, बुरे संबंध, सुखद घटनाएँ, दुःखद घटनाएँ, लाभ-हानि, मान-अपमान बगैर पूर्व जन्म के संस्कारों से आपके पास फटक भी नहीं सकते। आपके हर आकर्षण एवं विकर्षण के पीछे पूर्वजन्म के संस्कार जिम्मेदार होते हैं। ग्रहों की स्थितियाँ नहीं चूंकि पूर्वजन्म के विज्ञान की भारत में गहरी जड़ें होने के बावजूद भी इस विज्ञान पर कभी कोई गहरा अध्ययन, रिसर्च एवं प्रयोग नहीं हुए। अगर इस विज्ञान की भारत में जानकारी रही भी है तो सामान्यजन तक पंडित-परोहित-ज्योतिषियों एवं बाबाओं ने पहुँचने नहीं दिया क्योंकि अगर सामान्यजन को ये पता चल जाए कि आज हमारा भाग्य कल के कर्मों से निर्मित हुआ है। आज के इस परिणाम के जिम्मेवार हम हैं। चुनाव हमने किया है। ईश्वर या ग्रहों का इसमें कोई लेने-देन नहीं है तो समझ लीजिए कि पंडित, पुरोहित, ज्योतिष, बाबा, नग-नगीने, ताबीज, तंत्र, यंत्र, मंत्र को कोई नहीं पूछेगा। आपके जागते ही सारे ईश्वर और ग्रहों के एजेन्ट निरर्थक हो जाते हैं। इनकी रोजी-रोटी, आमदनी, पद-प्रतिष्ठा सब समाप्त हो जाती है। और ये वर्ग भारत देश में तो कम से कम कभी ऐसे होने नहीं देगा। आज भी करोड़ो भोली-भाली जनता को अपने सदियों पुराने इस षड़यन्त्र के जाल में फंसकर भेड़-बकरियों की तरह हांके जा रहे हैं और ये भी बहुत कड़वी सच्चाई है कि हमारी अज्ञानता, वासना, लालच, भय ने इन लोगों को पैदा किया है, हम भी उतने ही जिम्मेवार हैं। जिसके कारण आज भारत में ईमानदार व्यवसायी से ज्यादा सम्पन्न ये बाबा, ज्योतिषी और महात्मा हैं। फिर भी हमारी आँख नहीं खुलती।

भारत में जो सही ज्योतिष विज्ञान के साधक हैं। जिनके पास कोई झूठ, चालाकी, व्यवसायिकीकरण और चापलूसी नहीं है। उन ज्योतिषियों को बहुत कम लोग जानते हैं। ज्योतिषी, पंडित, पुरोहित, बाबा जैसे लोग समाज के सही पथ प्रदर्शक और मार्गदर्शन का कार्यभार संभालते थे और यही इनका कर्तव्य भी है जो कुछेक ज्योतिष अवश्य निभा रहे हैं।

ये धांधली सिर्फ भारत में :- विदेशों में भी ज्योतिष, अंकगणित, हस्तरेखा, टेरोकार्ड रूल्स, डाउज़िंग, क्रिस्टल बॉल गेज़िंग जैसी विद्याओं के अनेकों विद्वान है लेकिन उनमें से 99फीसदी विद्वान पूरी ईमानदारी से इन विद्याओं का अभ्यास करते हैं। न उन्होंने आज तक किसी को शनि, मंगल, राहु, केतु, कालसर्प तथा पितृदोष आदि का डर दिखाया, न कोई ताबीज, तंत्र, यंत्र, मंत्र बाँटें, न शनि के मंदिर बनवाए, न कभी पूजा-पाठ, हवन, जप-तप, यज्ञ करवाए, न कोई दान-पुण्य करवाए। सिर्फ सामान्य जीवन में सकारात्मक परिवर्तन का ही मार्गदर्शन दिया, न उन्होंने तिलक भस्म लगाई, न गेरुए कपड़े पहने, न कभी कोई दाढ़ी बढ़ाई, न बाबा, पुजारी बनकर प्रवचन दिए। जिस तरह एक विशेष विज्ञान का एक एक्सपर्ट होता है जैसे आर्किटेक्ट, डॉक्टर, इंजीनियर, मैकेनिक-वैसे ये शुद्ध प्रोफेशनल ढंग से कार्य करते हैं।

ये सारी बेईमानी, ये सारी धांधलियाँ, ये डर, ये अन्धविश्वास सिर्फ भारत में ही हैं। कायरता, सहनशीलता हमारे रग-रग में पहुँच गई है। हम क्रान्ति करना ही भूल गए, हम स्वयं ही इनके गुलाम हैं, नेता गुलाम हैं, आफिसर गुलाम हैं, जज गुलाम हैं तथा पुलिस गुलाम हैं तो विरोध करेगा कौन?

भारत के कई बड़े-बड़े ज्योतिषियों से मेरा परिचय है। कईयों ने अन्दर की स्पष्ट बात यही बताई कि शनि, मंगल, राहु, केतु ये चारों उनके कमाऊ पूत हैं। ये न हो तो ज्योतिषी भूखे मर जाएँ।

इनका पूरा धन्धा नग, नगीने, तरह-तरह के रंग-बिरंगे डिजाइन वाले यन्त्रों पर निर्भर हैं। जिन यन्त्रों को आप न जानते हैं, न समझ सकते हैं तो सोने पे सुहागा। क्योंकि अब आप ज्यादा महंगा खरीद सकते हैं, मैं इस सत्य को अच्छी तरह जानता हूँ कि चूंकि कई ज्योतिषी, पंडित, संस्कृत भाषा के जानकार होने के कारण जैसे मर्जी आए वैसा मंत्र बना देते हैं, जैसे मर्जी आए वैसा यंत्र, बीज मंत्र का आविष्कार कर देते हैं ओर अगर आपको कोई यूँ कह दे कि प्राचीन है, शास्त्रों का गूढ़ रहस्य है, दुर्लभ यंत्र है, साक्षात् शंकर ने लिखा है बस अब आप भूलकर भी सन्देह नहीं करेंगे। आप सब कुछ लुटाने को तैयार हो जाते हैं।

क्या पंडित-ज्योतिषी शनि के ऑथेराइज्ड एजेन्ट हैं?

पहली बात न तुम पर कभी कोई शनि लगता है, न मंगल लगता है, तुम्हें तो पता भी नहीं है कि ये सचमुच लगते भी हैं या नहीं - जैसे ही आप अपनी समस्याएँ लेकर ज्योतिषी के पास जाते हैं तो वह आपको ऐसी बातें बताता है जिन पर आप चुपचाप आँखें बन्द करके विश्वास कर लेते हो कि शायद ऐसा ही होगा। क्योंकि तुम्हें भाग्य के नियम नहीं मालूम, तुम्हें आकर्षण के नियम नहीं मालूम, तुम्हें अचेतन मन के खेल नहीं मालूम, तुम्हें तुम्हारी बेहोशी और अज्ञानता ही मालूम। इसलिए तुम्हे लगता है कि शायद शनिमंगल ही टांग अड़ा रहे होंगे।

सारे शनि मंगल सिर्फ भारतीयों को लगते हैं विश्व में अन्य किसी को नहीं -हाँ मज़ेदार बात तो है कि सारे शनि मंगल सिर्फ भारतीयों को लगते हैं और भारत में भी सिर्फ हिन्दुओं को, क्रिश्चियन को नहीं लगते, मुस्लिमों को नहीं लगते, जापानी या अफ्रीकन आदि को नहीं लगते, सिखों को भी नहीं लगते। इसलिए सिख लोग रविवार को सुबह ही शादि करते हैं, वह भी गुरूद्वारे में, अग्नि के फेरे भी नहीं लेते। क्या उनकी शादियाँ टूट गई? ग्रह ईश्वर नाराज होकर उनपर कहर ढ़ा रहे हैं। अच्छा हुआ नानक, कबीर, बुल्लेशाह जैसे गुरूओं ने इन्हें इस डर से हमेशा के लिए मुक्त कर दिया। मुसलमान, क्रिश्चियन सभी रविवार को सुबह शादी करते, सारे दक्षिण भारतीय सुबह शादी करते। सिर्फ उत्तर भारत का हिन्दु बड़ा डरा हुआ है जो पंडितों के चक्कर में आकर, दुल्हा-दुल्हन को थकाकर आधी रात को शादी करवाते हैं। क्या परिणाम है? इस डर का, कौन सी तुम्हारी शादियाँ सुधर गई, कौन से तुम्हारे जीवन ऊँचे उठ गए। कौन से समाज में इस डर से क्रान्ति आ गई। सब भ्रम, सच, धोखा सिर्फ अंधाधुन्ध मान्याताएँ पंडितों और ज्योतिषियों का माया जाल है।

सारे शनि-मंगल पूरे विश्व की 2 फीसदी हिन्दु की आबादी को ही प्रभावित करते हैं। 98 फीसदी आबादी पर उनका कोई असर नहीं होता। जंगल में जाकर बैठ जाओ तो सारे शनि-मंगल शांत हो जाते हैं। जैसे ही शहर आते हैं- इच्छाएँ -सपने देखते हैं कि कार चाहिए, प्रापर्टी चाहिए, मकान चाहिए, शादी करनी है, नौकरी चाहिए तो बस शनि-मंगल आदि ग्रहों का प्रभाव पड़ना शुरू हो जाता है।

जवानी में इनका प्रभाव ज्यादा पड़ता है क्योंकि महत्वकांक्षाएँ, सपने, इच्छाएँ बहुत है। बुढ़ापे में शनि मंगल लगने कम हो जाते हैं क्योंकि न तो नौकरी चाहिए, न प्रमोशन, न शादी, न कोई जोरदार आमदनी। जैसे ही इच्छाएँ-सपने कम हो जाते हैं तो शनि-मंगल, ग्रह आदि भी शान्त हो जाते हैं। इसलिए सत्य तो यह है कि सच्चे निरासक्त, निर्मोह, जागृत बुद्ध पुरूष को किसी भी ग्रह का प्रभाव प्रभावित नहीं कर सकता। उल्टे इनके प्रभाव से ग्रह प्रभावित होते हैं। ये वो प्रकाश के पुंज है जो भयंकर से भयंकर नकारात्मक ऊर्जाओं को नष्ट कर देते हैं।

जब कोई पंडित या ज्योतिषी कहता है कि तुम पर भारी शनि लगा है तो साथ में यह भी कहता है कि चिंता की कोई

बात नहीं शनि महाराज ने सारी ऑथेराइज्ड एजेन्सी हमें ही दी है। बस हमारे जेब में जैसे 25-50 हजार दक्षिणा के रूप में आ जाएँगे। हम शनि महाराज को T से सूचित कर देंगे कि पैसे आ गए अपना प्रभाव हटा लें।

आप इस आधुनिक युग में पूरी श्रद्धा के साथ अपने पैसे लुटा आते हैं। क्या कर लेंगे ये पंडित और ज्योतिष लालची और व्यवसायी को तुम्हारी समस्याओं के समाधान से क्या लेना-देना। हाँ! सच्चा सात्विक पंडित या ईमानदार ज्योतिषी अगर हृदय से सच्ची प्रार्थना, आराधना द्वारा सकारात्मक तरंगें निर्मित करेगा तो निश्चय ही उन तरंगों का प्रभाव सकारात्मक परिणाम के रूप में अवश्य दिखाई देगा। चालाक, चालबाज, लालची ज्योतिषी कुछ नहीं करता पूजा-पाठ, अनुष्ठान का सिर्फ ढ़ोंग मात्र करता है। जिससे किसी सकारात्मक परिणाम की आशा नहीं की जा सकती।

तुम कैसे ऐसा विश्वास बड़ी आसानी से कर लेते हो कि पंडित या ज्योतिष के जेब में जैसे ही पैसे गए-शनि मंगल सारे सुधर गए। इतना बड़ा अंधविश्वास या भ्रम या डर हम कैसे पाल लेते हैं?

शनि कोई व्यक्ति नहीं, फिर हमें ये मंत्र देते हैं कि शनि महाराज को प्रसन्न करो, इन्हें मनाओ, इनके कोप को शांत करो। क्योंकि शनि महाराज एक बड़े अहंकारी व्यक्तित्व हैं, बड़े निर्दयी हैं, जब तक तुम उनका एक लाख बार नाम नहीं जपोगे - 'ॐ शं शनिश्चराय नमः' तब तक वह अत्याचार बंद नहीं करेगा। जैसे ही एक लाख जप पुरे हुए और मोगेम्बो खुश हुआ। सारे किरणें फटाक से खींच लेगा।

क्या ये शनि मंगल, राहु-केतु, बुध, शुक्र सारे ग्रह कोई आदमी है, कोई व्यक्तित्व है। क्या इनके पास कोई दिमाग है क्या ये भावात्मक समझ रखते हैं?

क्या सोचकर तुम इनकी पूजा करते हो मंत्र जपते हो, इनके मन्दिर जाते हो। धरती की तरह मिट्टी, खनिज तत्वों और गैसों से भरा हुआ एक ग्रह खुद आसमान में शनि-मंगल अवश्य परेशान हो रहे होंगे और हँस भी रहे होंगे कि मानव जाति के जीव जो धरती पर रहते हैं उन्हें हम जानते तक नहीं और पूरा भारत का हिन्दु वर्ग डर-डर कर हमारा नाम लेता है, पूजाएँ करता है।

मज़ेदार बात तो ये है कि पूरे विश्व में ये शनि मंगल 84 लाख योनियों में किसी योनी पर नहीं लगते सिर्फ मानव योनी पर ही लगते हैं। सारे ग्रहों को शान्त करो। ये षडयन्त्र पंडितों और ब्राह्मणों में अपनी रोजी-रोटी पक्की करने के लिए रचा। क्या सचमुच ईश्वर का हाथ है या ग्रहों का हाथ है? इस प्रश्न पर आज तक किसी ने शक नहीं किया, न ही कभी कोई सत्य की खोज की। न ईश्वर दिखता है, न ग्रहों का प्रभाव, बस जो पंडित और ब्राह्मण कहदे वह अटल सत्य। इसलिए हर पूजा-पाठ में ग्रहों को शान्त करना ही पडता है।

कैसे पैदा होती हैं समस्याएँ, दुःख एवं रोग :-

हमारे चारो ओर हजारो समस्याएँ, दुःख एवं रोग है।, नौकरी, व्यवसाय, संबंध, धन इत्यादि में हम रात-दिन जूझ रहे होते हैं। हमें समझ में नहीं आता कि आखिर ये सब कैसे घटित हो रहा है। इसलिए हम अंजाने में पंडितों, ज्योतिषियों और बाबाओं के जाल में फँस जाते हैं। आईए इस रहस्य को समझें।

1. इस संसार में ईश्वर ने नियम बनाए और हमेशा के लिए सो गया। वह कुछ नहीं करता, न बना रहा है, न बिगाड़ रहा है। बस नियम काम कर रहा है। नियम के अनुसार अच्छा-बुरा इस संसार में घटता है। ईश्वर कहीं पर भी बीच में नहीं है। आप चाहे ईश्वर को माने या न माने, तारीफ, पूजा-अर्चनाएँ करे या न करें। कुदरत के सख्त कानून में राम ना आड़े आए। ईश्वर तो संसार की अभिव्यक्ति है, सुगन्ध है, ऐश्वर्य है। वह कुछ नहीं करता।

2. जो भी मानव धरती पर जन्म लेता है इच्छाएँ, सपने, महत्वाकांक्षा विकसित करता है, फिर व्यक्ति समाज या जिस देश से जुड़ता है तो उसके भी गुण-धर्म, स्वभाव, संस्कृति, प्रतिक्रियाओं के साथ वह जुड़ता है। जिससे विविध तरह की सकारात्मक या नकारात्मक तरंगे पैदा होती हैं। अगर आप सब कुछ छोड़कर जंगल चले जाएँ, साधु बन जाएँ, इन सबके सम्पर्क में ही ना आएँ, तब सिवाय हमारे व्यक्तिगत कर्मफल के हम और कोई कर्मफल नहीं भोगतें। जितना हम लोग-समाज-देश से जुड़ते चले जाते हैं, हमें उनका भी कर्मफल अपने साथ जोड़ना ही पड़ता है। शादी करते ही पति या पत्नी का कर्मफल, बच्चे होते ही बच्चों का कर्मफल समाज से जुड़ते ही समाज के कर्मफल-देश से जुड़ते ही देश के कर्मफल हम जोड़ने ही पड़ते हैं, जिससे विविध तरह की प्रतिक्रियाएँ, संयोग, परिस्थितियाँ घटित होती है। चुनाव हम करते हैं, इच्छाएँ-सपने हम देखते हैं, उसका अच्छा-बुरा प्रतिफल नियमानुसार भुगतना ही पड़ेगा कोई पलायन का मार्ग नहीं।

3. हर व्यक्ति अपने आप में एक पूर्ण इकाई है। उसकी प्रत्येक पल में की जाने वाली क्रिया-प्रतिक्रिया, उसका चुनाव उसके सकारात्मक या नकारात्मक भाव उसके हर पल भाग्य और भविष्य का निर्माण कर रहे होते हैं, यह

शत-प्रतिशत आपकी रचना है। इसमें एक प्रतिशत भी ईश्वर या ग्रहों का कोई लेन-देन नहीं है। संस्कार भी आपके-फल भी आपके संस्कार समाप्त - फल भी समाप्त-प्रकृति का सीधा नियम कोई बीच में नहीं। जितनी बड़ी भीड़ के साथ हम जुड़ते जाएँगे। उतनी ही बड़ी भीड़ के एक-एक व्यक्ति अपने अलग-अलग संस्कारों की ऊर्जा के साथ हमें जुड़ना ही पड़ेगा। आप चाहो तो अपने स्वार्थ के लिए इनसे जुड़ो या आप चाहो तो इनसे दूर भाग जाओ-चुनाव शत-प्रतिशत आपका है-ईश्वर या ग्रहों का नहीं।

4. आकर्षण के नियम : सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एक उर्वरक खेती की तरह है जो बीज फैंको ठीक उसके अनुसार फल निर्मित कर देती है। हमारे सपने, हमारी इच्छाएँ, हमारे बीज हैं। जब हम जूनून एवं कर्म से इनको पानी डालते हैं तो यह ब्रह्माण्ड से उन्हीं तरंगों को आकर्षित कर फलित होने लगते हैं। विचार ही वस्तु बनते हैं-जैसा विचार-वैसी वस्तु, चाहे सकारात्मक या नकारात्मक, ब्रह्माण्ड पूरी ऊर्जा के साथ उसको फलित करता है।

हम चुम्बक के वास्तविक केन्द्र हैं, हम चुम्बक बन कर कुछ भी, जो चाहे ब्रह्माण्ड से आकर्षित कर सकते हैं, सम्भव-असम्भव शब्द आपके हैं, ब्रह्माण्ड के नहीं। इच्छाएँ-सपने भी आपके हैं ब्रह्माण्ड के नहीं। ब्रह्माण्ड को आपको कुछ भी देने में एक प्रतिशत भी रूचि नहीं है। आप चाहें तो चुम्बक बन कर ब्रह्माण्ड से आकर्षित कर लें, न चाहें तो चुपचाप बैठे रहें, ब्रह्माण्ड को कोई लेन-देन नही।

मानव जो जो सपने देखते जाएगा, वह सब फलित होता जाएगा। हवाई जहाज, राकेट, कार, मोबाइल, आश्चर्य जनक बिल्डिंग इत्यादि कुछ भी। कोई ईश्वर, कोई ग्रह इसके बीच में नहीं आता। इसमें आकर्षण का ठोस नियम ही काम करता है।

5. सब कुछ अचेतन मन के खेल- संसार का हर व्यक्ति अचेतन मन का उत्पाद है। वह पूरी तरह हर पल अचेतन मन द्वारा संचालित रहता है। वह जो विश्वास करता है, अचेतन मन उसी को पैदा कर लेता है। अचेतन मन हमारा जिन्न है, कामधेनु है, कल्पवृक्ष है जो चाहो वही रच देता है। चाहे पॉजीटिव हो या नेगेटिव अचेतन मन कोई तर्क नहीं करता, कोई चुनाव नहीं करता। वह तो बस आपके हुक्म का गुलाम है, आप जैसे-जैसे विश्वास, डर, विचार, मान्यताएँ पैदा करते चले जाते हैं अचेतन मन चुपचाप ब्रह्माण्ड से उन्ही से सम्बन्धित ऊर्जाओं को आपके जीवन में आकर्षित करते चले जाता है। आज आप जहाँ पर भी हैं, सफल हैं-असफल हैं, अमीर-गरीब हैं, सुखी-दुःखी हैं, रोगी-निरोगी हैं ठीक आपकी सोच के परिणाम है। इसके मध्य में ईश्वर-कोई ग्रह में कभी नहीं आता।

हमारे ही डर-हमारे ही विश्वास,
बंधाते हैं आस या करते हैं निराश।।

अचेतन मन इस संसार का दूसरा भगवान है, रचनाकार है। ईश्वर तो अपनी रचना कर हमेशा के लिए सो गया। वह कोई नई रचना नहीं करता, परन्तु मानव में उसने एक ऐसा अचेतन मन डाल कर भेज दिया है जो लगातार धरती पर जब तक रहेगा तब तक असंख्य-अगनित रचनाएँ करता ही रहेगा। क्योंकि अचेतन मन और आकर्षण के नियम इस धरती पर हर स्वप्न, हर इच्छा, चाहे सम्भव हो या असम्भव हो फलीभूत करने की अचूक क्षमता रखते हैं।

आपके विश्वास, विचार एवं मान्यताएँ बदलते ही चंद सेकिण्डों में आपका जीवन बदल जाता है। न कोई ग्रह, न कोई ईश्वर, न कोई भाग्य के प्रति कोई शिकायत बच जाती है, इनको दोष देना पूरी तरह समाप्त हो जाता है, लाखों विद्यार्थी एवं परिवारों में यह परिवर्तन हमने प्रत्यक्ष अनुभव किया है। जैसे ही उन्हें स्वास्थ्य, समृद्धि, आनन्द के अचूक नियमों की जानकारी मिली, उनके अंधविश्वास, भ्रम मिट गए। उन्हें अपनी शक्तियों की पहचान हुई चंद दिनों में उनकी जीवनधारा ही पूरी की पूरी शिर्षासन की तरह सकारात्मक परिणामों में रूपांतरित हो गई। जबकि 50 फीसदी से भी ज्यादा परिवारों को ज्योतिषियों ने यह दावा किया था कि उनके ग्रहों की स्थिति बड़ी खराब है और ये परिवार तरह-तरह के उपायों में सालों से उलझी हुई थी। जिस दिन उन्हें हमारी कार्यशाला में यह जानकारी मिली कि ग्रहों के प्रभाव हम पर नगण्य हैं, हम अपने अचेतन मन, आकर्षण के नियम एवं पूर्वजन्मों के कर्मों के अनुसार हर घटना व्यक्ति को आकर्षित करते हैं या विकर्षित करते हैं। पूरे के पूरे भाग्य और भविष्य का चुनाव हमने ही किया है चाहे वह जाने या अंजाने में हो, होश या बेहोशी में हो और आज उसका प्रतिफल वर्तमान के रूप में हमारे सम्मुख है। जिसके हम स्वयं जिम्मेदार हैं, अपने स्वर्ग और नरक के हम ही स्वयं रचनाकार हैं। बस उसी दिन से उनकी आँख खुलते ही उनकी सारी मान्यताएँ ही बदल गई और उन्होंने होश पूर्वक उन नियमों का पालन करना शुरू कर दिया जिसे वह रोग, गरीबी, दुर्भाग्य और दुःख से मुक्त होकर स्वास्थ्य, समृद्धि, सफलता और आनन्द से जीवन को स्थाई रूप से जीवन जी सकें।

निम्नलिखित आश्चर्यजनक उदाहरणों से आप अच्छी तरह समझ जाएँगें कि यह सब न कोई ग्रह, न कोई ईश्वर, न कोई भाग्य, न कोई चमत्कार है बल्कि इस सब के पीछे अचेतन मन का विज्ञान चल रहा है:-

1. श्री महेन्द्र सिंह सिरसत (इटली) - श्री महेन्द्र सिंह सिरसत इटली के टोरीन शहर में कई सालों से नौकरी और कामधन्धे को लेकर जूझ रहे थे। वह फुटपाथ पर दुकान लगाते थे। जब वह हमसे मिला तो हमने उसे अपनी दो दिन की रेकी कार्यशाला 'रेकी एंड माइंड पॉवर' में आने का निमन्त्रण दिया। हमारी रेकी कार्यशाला में आने के बाद से ही उसके विचारों में परिवर्तन आया कि आज की वर्तमाल हालत का पूर्ण जिम्मेदार वह स्वयं है। उसके अचेतन मन में दबी हुई नकारात्मक धारणाएँ है। उसी दिन से उसने सकारात्मक धारणाओं को अपनाकर काम करना शुरू कर दिया। धीरे-धीरे सारी परिस्थितियाँ बदलने लग गई। आज वह करोड़ो की सम्पत्ति का मालिक है। इटली में उसकी चार बड़ी-बड़ी इमारतें हैं। आज वह इटली के प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है। उसकी पत्नी इटली की निवासी है जबकि सभी ज्योतिषियों ने उसको इटली छोड़ कर भारत में बसने के लिए कहा। उसके जीवन में सिर्फ नौकरी है, अमीरी नहीं। इनके भाग्य में कालसर्प, पितृदोष और पता नहीं कितने प्रकार के दोष मढ़ दिए। '2012 तक उनके भाग्य में कोई परिवर्तन नहीं आ सकता। उन्हें इसी हालत में रहना पड़ेगा' ऐसा बताया गया। परन्तु 2008 तक ही उनका सम्पूर्ण जीवन बदल चुका था। अब वह जाग चुका है, वह समझ चुका है कि उसके भाग्य की चाबी उसके हाथ में है।

2. श्री रवि रंजन (गुजरात) - श्री रवि रंजन पेशे से पत्रकार है। कई सालों से सीए टयूटोरियल कलस खोलने का प्रयास कर रहे थे, परन्तु असफलता और नुकसान के सिवाय कुछ हाथ नहीं आया। ज्योतिषियों ने स्वाभाविक उन्हें अनेकों ग्रहों का शिकार बताकर काफी धन लूट लिया, तांत्रिकों ने काला जादू करवाकर खूब पैसे झटका दिए, संयोगवश जैसे ही श्री रवि हमारी कार्यशाला में आकर हमारे साथ जुड़े उसी दिन से सारे ग्रह उन्हें छोड़कर भाग खड़े हुए। उनकी पूरी विचारधारा ही बदल गई। अचेतन मन की शक्तियों और आकर्षण के नियम जानते ही उन्होंने एक शिक्षण संस्थान में सबसे पहले एक अच्छा उच्च आमदनी वाली नौकरी हासिल की। उसके बाद इन्हीं नियमों को अपनाकर दो सालों के भीतर 80 हजार की आमदनी को डेढ़ लाख तक पहुँचा दिया। तीसरे साल अपना खुद का शिक्षण संस्थान की स्थापना कर दी और आज वह व्यक्ति इन्हीं नियमों की बदौलत पूरे गुजरात में अपनी ब्रांच खोलकर एक प्रतिष्ठित संस्थान का रूप धारण कर चुका है। जो व्यक्ति चार-पाँच हजार प्रति माह कमा रहा था, आज वह 15 लाख रूपए अपने स्टॉफ में सेलरी के रूप में बाँट देता है। सारे ग्रहों का, ईश्वर का, भाग्य का, प्रकोप आदि पूरी तरह समाप्त। आज वह अपने भाग्य, समृद्धि एवं ऊँचाईयों का स्वयं भाग्य विधाता है।

ऐसी हजारों सच्ची कहानियाँ यहाँ पेश की जा सकती हैं। लेकिन पाठकगण अच्छी तरह समझ गए होंगे कि उन्नति-अवनति, सुख-दुःख, अमीरी-गरीबी में किसी ईश्वर या ग्रहों का कोई लेनदेन नहीं है।

ज्योतिष, भाग्य एवं ईश्वर के बहाने हमने भारत को, भारत के युवाओं को भाग्यवादी बना दिया है। इसी कारण भारत आज तक अपनी गरीबी से ऊपर नहीं उठ पाया है। भारत की आज की हालत के जिम्मेदार भी यही है। युवाओं को अपनी आंतरिक शक्तियों की पहचान की व्यवस्था करने के बजाय हमने उनके हाथों में नग-नगीने, ताबीज़, टोने-टोटके, मंत्र-तंत्र आदि पकड़ा दिए हैं। शार्टकट में अपना भाग्य बदलने के लिए ऐसे भाग्यवादी युवक से आप कौन से समृद्ध भारत की कल्पना कर रहे हैं। इस लेख के माध्यम से आप अभी भी नहीं जागना चाहते तो हमारा भविष्य सचमुच में निराशाजनक हैं।

हम भविष्य बनाने के बजाय भविष्य जानने में ज्यादा उत्सुक हैं

विश्व का समझदार से भी समझदार आदमी अपना भविष्य जानने में जरूर रूचि दिखाएगा। यहाँ तक कि एक बार तो महात्मा लोग भी स्वयं का भविष्य जानना चाहेंगे अगर कोई प्रसिद्ध भविष्यवक्ता उनके सम्पर्क में आ जाए। हमें यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि इस संसार में भविष्य का कोई अस्तित्व ही नहीं है भविष्य वर्तमान से आकार ग्रहण करेगा। जैसे-जैसे वर्तमान के बीज पड़ते जाएँगे आपके चुनाव कर्म एवं विचारों से वैसे-वैसे भविष्य आकार ग्रहण करता चला जाएगा। आज आप बीते कल के परिणाम हैं। कल आप वो ही होंगे जिसका आप आज चुनाव करेंगे। अगर आपके घर में काँटे-झाड़ियाँ हैं तो वे आपके पूर्व चुनाव-कर्म के कारण। तो आप अभी फूलों के बीज वर्तमान में बोने आरम्भ कर अपना भविष्य फूलों वाला बना सकते हैं। भविष्य कभी निश्चित नहीं होता, वर्तमान में हम काँटें-झाड़ियों का पोषण बंद कर दें तो वे भविष्य में सूख जाएँगी और झाड़ियों के स्थान पर फूलों के बीजों को सींचना आरम्भ कर दें तो हमारा भविष्य सुख, फूलों और सुगन्धों से भरा होगा। अगर आप इस फुलवारी को निरन्तर जारी रखना चाहते हैं तो निरन्तर फूलों के बीज वर्तमान में बोते जाएँ। यह आप पर निर्भर करता है कि आप अपने घर में काँटे बोते है या फूल। इसमें ईश्वर, ग्रहों या भाग्य का इसमें कोई लेना देना नहीं। आज आप जहाँ पर भी हैं सहीं हैं या गलत, आप अपना कैसा

भविष्य चाहते हैं तुरंत इसका अपनी इच्छाशक्ति के माध्यम से चुनाव कर मार्ग बदल सकते हैं। अगर कोई शक्ति आपको रोक सकती है तो वह सिर्फ आप ही हैं।

ज्योतिष में जितना सहज, बाल स्वाभाव वाला साधक होगा उतना ही उसकी अंतर्प्रेरणा अच्छी होगी; उसकी भविष्यवाणी हमेशा सही होगी। इसलिए भारत के 99 फीसदी ज्योतिष भविष्यवाणी में फैला है, क्योंकि वह साधक न होकर व्यवसायी है। अगर आप जीवन में असफल हैं तो ज्योतिषी, वास्तुशास्त्री या बाबा बन जाइए।

भारत के जितने भी ज्योतिषी, वास्तुशास्त्री या बाबा लोग हैं आप उनके पूर्व जीवन का अध्ययन करें तो आप हैरान हो जाएँगे कि ये सभी लोग पढ़ाई में फिसड्डी रहे हैं, तरह-तरह के काम-धन्धे, नौकरी में भाग्य आजमाइश कर असफल रहे होते हैं या नहीं तो उन्हें कोई नौकरी या धन्धा समझ में ही नहीं आया कि क्या करें तो फिर सबसे आसान पैसा कमाने का यही धन्धा उन्हें समझ में आता है। मेरे स्वयं के भी परिवार में भी जब कोई नौकरी या धन्धा अनुकूल नहीं लगा तो सब के सब भाई बन्धु लौटकर पंडित और ज्योतिष कार्य में लग गए। क्योंकि ईश्वर, ग्रहों और काले जादू के नाम पर भारतीय लोगों को कुछ भी बता दें, मनचाहे टोटके दे दें। लोग उल्लू बनने को पूरी तरह तैयार रहते हैं। इससे मजेदार बात और हो ही नहीं सकती कि जीवन में पूरी तरह असफल रहे लोग आपको सफल, सुखी, समृद्ध जीवन का मार्गदर्शन कर रहे हैं। मेरी पहचान में अब तक जितने भी ज्योतिषी हैं उन सभी के पीछे का असफल इतिहास यही है।

हालांकि इसमें ऐसे भी ज्योतिषी अवश्य हैं जो पूरी विद्वत्ता, ईमानदारी के साथ इस अनूठे विज्ञान के साथ न्याय कर रहे हैं, वे न किसी को लूटते हैं, न टोने-टोटके करवाते हैं, न कोई डर पैदा करते हैं। एक सच्चे मित्र-गुरू की तरह आपका उचित मार्गदशन करते हैं। ऐसे ज्योतिषी के सम्पर्क में आप आ जाएँ तो बड़े भाग्यशाली हैं, परंतु ये कुड़ाघर में जाकर छुपे हुए हीरे को खोजने जैसा है।

क्या टोने-टोटके, यंत्र-मंत्र काम करते हैं?

आपके दिमाग में यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि इस धरती पर केवल हिन्दू या उनके द्वारा माने गए देवी-देवता ही निवास नहीं करते, 98 फीसदी अन्य जातियाँ, धर्म एवं मान्यताओं के लोग भी हैं पूरे विश्व में करीब-करीब 300 से ज्यादा धर्म हैं और 36 करोड़ से ज्यादा देवी-देवता हैं। फिर हर धर्म - हर देवता के अलग-अलग यंत्र, अलग-अलग मंत्र। किसी मंत्र, यंत्र या टोटके में कोई शक्ति नहीं होती। आपकी श्रद्धा उसमें ऊर्जा का निर्माण करती है। श्रद्धा हो तो राख (भभूत) भी जादू की तरह काम कर जाती है। भारत में इतने पाखंडी ज्योतिषी, बाबा, पंडित इसलिए चल पड़ते हैं कि उन पर श्रद्धा से लटकने वाले बहुत मिल जाते हैं।

मैं स्वयं अपनी कार्यशालाओं में स्वयं का यंत्र, मंत्र बनाने की कला सिखाता हूँ ताकि हर व्यक्ति को ये समझ में आ जाए कि कोई आसमान में बैठकर आपके टोने-टोटके करने से खुश या नाराज नहीं होता, कोई आपके यंत्र-मंत्र देखकर समृद्धियाँ शान्ति नहीं भेजता। असली रचनाकार तो आप हैं (मेरी पुस्तक 'अवचेतन मन की चमत्कारी शक्तियाँ' में मैंने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है)।

आप से बड़ा यंत्र, मंत्र, नग, रूद्राक्ष, टोटका संसार में कोई नहीं है। आपके भीतर जितना डर, अज्ञानता एवं अंधविश्वास होगा। आपका हाथ इन वैशाखियों से भरा हुआ होगा और आप जितना अपनी अनन्त शक्तियों को जानकर उस पर प्रबल आत्मविश्वास करेंगे तो आपकी सारी बैसाखियाँ अपने आप छूट जाएँगी, क्योंकि ईश्वर के बाद एकमात्र दूसरा रचनाकार सिर्फ आप हैं, ईश्वर ने तो अपनी रचना सीमित कर ली परंतु मानव की रचना तो असीमित हैं। आप जो चाहें संसार में रच सकते हैं, आपकी इच्छाएँ, सपनों, जुनून एवं कर्म के आगे ब्रह्माण्ड झुककर कुछ भी रचने को तैयार है आप में दम है तो खींच लो ब्रह्माण्ड अपने आप कभी कुछ नहीं देने वाला।